शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.III, pp (913-920) July - Sep. 2019

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का सत्याग्रह

डॉ. माईकल
स्नातकोत्तर, गाँधी विचार विभाग
तिलका माँझी भागलपुर,विष्वविद्यालय
भागलपुर, बिहार
Emai.-drmaikalbh@gmail.com

सारांश

सत्याग्रह शब्द दो शब्दों के संयोग से बना सत्य + आग्रह। सत्य का शाब्दिक अर्थ सच्चाई और आग्रह का अर्थ दृढ़तापूर्वक अड़े रहना। इस प्रकार सत्याग्रह का अर्थ हुआ, सत्य के लिए दृढ़ता पूर्वक अड़े रहना। गाँधीजी सत्य को सर्वाधिक महत्व देते थे, इसलिए वे सत्य को ईष्वर कहा करते थे। सत्याग्रह एक ऐसा अमोध अस्त्र है जिसके संचालन से बिना किसी खर्च के समाज या परिवार में छाये अवसाद, प्रेम एवं सौहार्द्र में बदल जाते हैं। इसके लिए गोली, बम एवं पिस्टल की आवश्यकता नहीं होती है। इसका प्रचलन हमारे देश में वैदिक काल से ही चला आ रहा है लेकिन राष्ट्रीयपिता महात्मा गाँधी ने इसमें अपनी निष्ठा एवं श्रद्धा की चासनी लपेट कर इसे संजीवनी बना दिया जिसका प्रयोग कर सदियों से गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता को स्वतंत्र फिजा में सांस लेने का अवसर प्राप्त हुआ। आर्थिक तथा बौद्धिक रूप से सम्पन्न अंग्रेजों को झख मारकर स्वदेश लौटना पड़ा।

प्रस्तावना

गाँधी जी सर्वप्रथम सत्याग्रह का प्रयोग 11 सितम्बर 1906 में दक्षिण अफ्रीका में किया। उस समय दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के कारण भारतीय प्रवासी पर नित नये अत्याचार होते थे और तरह–तरह के अपमानजनक कानून उनपर लागू किया जाता था। एक ऐसा ही कानून ट्रांसवाल विधान सभा में अगस्त 1906 में भारतीय पंजीकरण विधेयक पेष किया गया। इस कानून के अनुसार ट्रांसवाल के रहने वाले हर भारतीय स्त्री–पुरुष और 8 वर्ष या उससे ऊपर की उम्र के बच्चों के लिए पंजीकरक करवाना आवश्यक था। गाँधी जी ने अपने हृदय की पुकार पर उन अप्रवासी भारतीय पर होने वाले अन्याय को देखकर इस कानून का विरोध किया। इसके लिए उन्होंने जो आंदोलन चलाया उसे "सत्याग्रह" नाम दिया। उसके साथ ही उन्होंने एक सच्चे सत्याग्रही होने के लिए कुछ आवश्यक गुणों का भी वर्णन किया। उन्होंने बताया कि एक सत्याग्रही स्वयं कभी दूसरों को अन्याय, अत्याचार सहते देख सकता है। एक सत्याग्रही गीता के उपदेश पर चलता है, अर्थात् कर्म के परिणाम की चिन्ता नहीं करता उसके लिए सत्य धर्म है, सुन्दर है, असत्य अधर्म, पाप है।

गाँधी जी ने कहा कि " मनुष्य मात्र के हृदय में सत्य के लिए यह जो गुप्त प्रतीत आदर और भय पाये जाते हैं, वे सत्याग्रह के शास्त्र की बुनियादी हैं। इसी को मनुष्य के हृदय में विद्यमान" 'अन्तःकरण' की आवाज कहा जा सकता है। सत्याग्रही को निःस्वार्थ वश मनुष्य अन्तःकरण की आवाज की अवहेलना करता है। ऐसा उपाय है जिसमें उसे स्वयं ही कश्ट सहना होता है वह अपने विरोधी को कोई कष्ट या दुःख दे ही नहीं सकता।

गाँधी जी ने उत्कट, चिन्तनयुक्त जीवन साधना करते– करते सत्ययुग की स्थापना के लिए जो रामवाण, अमोध साधन या शस्त्र पाया, उसका नाम उन्होंने दिया– सत्याग्रह।[1] दक्षिण अफ्रीका में प्रारम्भ में सत्याग्रह के स्थान पर 'पेसिव रेजिस्तेंस' शब्द प्रयुक्त होता था। पेसिव रेजिस्तेंस का संकुचित अर्थ किया जाता था। उसे कमजोरों का ही हथियार माना जाता था। क्योंकि उसमें द्वेष हो सकता है और उसका अंतिम स्वरूप हिंसा में भी प्रकट हो सकता है। पेसिव रेजिस्तेंस के प्रति इसी संकीर्ण धारणा के चलते गाँधी हिंदुस्तानियों की लड़ाई के लिए अलग शब्द खोजने के लिए प्रवृत्त हुए और 'सत्याग्रह' शब्द सामने आया।[2] अन्यत्र गाँधी जी कहते हैं कि, 'सत्य पर आरूढ़ रहना ही सत्याग्रह है।'[3]

सत्याग्रह श्रेष्ठ, सरल, निष्कपट, निःस्वार्थ, प्रधान जीवन बिताने कि अनुशासन– श्रृंखला है और दूसरी ओर यह समूह गत, समाजगत अन्यायों के निवारण का उपाय भी है। वह अहिंसा को सक्रिय एवं संगठित करता है। सामूहिक स्तर पर, समाज के दोषों का निवारण के लिए उद्बुद्ध क्रियात्मक अहिंसा ही सत्याग्रह है। दूसरे शब्दों में सामज पर अहिंसा का आरोपण एवं उसकी उपलब्धि का प्रयत्न ही सत्याग्रह[4] गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह का अर्थ है, जिसे हम सत्य समझते हैं उसे मरणपर्यन्त न छोड़ना, सत्य के लिए चाहे जितनी तकलीफें उठानी पड़े, सब उठाना। कष्ट किसी को नहीं पहुँचाना चाहिए क्योंकि कष्ट पहुंचाने से सत्य का उल्लंघन होता है। इतना सब सहने की शक्ति आ जाना ही सच्ची जीत है।[5] अनुभव के समुंदर में 15 महीनों तक गोता लगाने के पश्चात् गाँधी जी ने सत्याग्रह को तलवार बनाया और कहा– "सत्याग्रह एक ऐसी तलवार है जिसके सब ओर धार है। उसे जैसे चाहे वैसे काम में लाया जा सकता है। उसे काम में लाने वाला और जिस पर वह काम में लायी जाती है, दोनों सुखी होते हैं। खून न बहाकर भी वह बड़ी कारगर होती है। उस पर न तो कभी जंग लगता है न कोई उसे चुरा ही सकता है।"[6] इस प्रकार सत्याग्रह एक महान शक्ति है जिस प्रकार गहरे से गहरे अंधकार का मुकाबला कर सकता है उसी प्रकार सत्याग्रह भी बड़ी से बड़ी विरोधी ताकत का मुकाबला कर सकता है।

स्वयं कष्ट भोगना और अन्याय का विरोध करना ही सत्याग्रह है अपील करना सत्याग्रह के क्षेत्र में नहीं आता। शुद्ध सत्याग्रह में सफाई की गुंजाइश नहीं होती है। हम आज जिस सत्याग्रह को देख रहे हैं, वह शुद्ध नहीं है, मिश्रित सत्याग्रह है। वह मिश्रण हमारे कमजोरी का माप और लक्षण है। जब शुद्ध सत्याग्रह किया जायेगा, तब दुनिया उसका आश्चर्यजनक प्रभाव दिखेगी, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।7 आदर्श सत्याग्रह के संबंध में गाँधी जी कहते हैं "सत्याग्रह शुद्ध प्रेम का चिन्ह है यह सत्याग्रह वह वस्तु नहीं जो आजकल सत्याग्रह के नाम से पुकारी जाती है। पार्वती ने शंकर के मुकाबले सत्याग्रह किया था। अर्थात् हजारों वर्ष तक तपस्या

की थी। रामचन्द्र ने भरत की बात नहीं मानी तो वह नदी ग्राम में जाकर बैठ गए। राम भी सत्य पाठ पर थे और भरत भी सत्य पथ पर थे। दोनों ने अपना–अपना प्रण रखा। भरत पादुका लेकर उसकी पूजा करते हुए योगारूढ़ हुए। राम की तपश्चर्या में बाहर के अंदर की संभावना थी। भरत की तपश्चर्या अलौकिक थी। राम के लिए भरत को भूल जाने का अवसर था। भरत तो पल–पल राम नाम का उच्चारण करते थे, अतएव ईश्वर दासानुदास हुए।[8]

यह शुद्धतम सत्याग्रह का उदाहरण है। दोनों में किसी की जीत नहीं हुई। यदि किसी को विजेता कहा जा सकता है, तो भरत को।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सत्याग्रह एक ऐसी शक्ति है जो मौन से और प्रत्यक्षतः धीमी गति से काम करती है। वास्तविकता यह है कि संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो कार्य में इसके सामने तीव्र या सीधी हो किन्तु कभी– कभी प्रत्यक्ष असफलता बर्बर शक्ति द्वारा अधिक तेजी से प्राप्त की जा सकती है। शरीर–श्रम द्वारा जीविका अर्जित करना सत्याग्रह की विधि है।[9] गाँधी जी सत्याग्रह शब्द का निर्माता होने की हैसियत से कहते हैं कि प्रत्यक्ष या परोक्ष, गुप्त या प्रगट अथवा मन, वचन और कर्म किसी भी प्रकार से इसमें हिंसा का समावेश नहीं है। विरोधी का बुरा चाहना या उसे दुखाने के इरादे से उसके प्रति कठोर वचन निकालना, इसमें सत्याग्रह की मर्यादा का उल्लंघन होता है। क्षणिक– आवेश में आकर शारीरिक हिंसा करना और दूसरे ही क्षण उसके लिए पछताना और फिर गई बात भूल जाना इसकी अपेक्षा बुरा विचार अथवा कटु–वचन सत्याग्रह की दृष्टि में कहीं अधिक भयंकर है। स्त्यग्रही में नम्रता होती होती है। सत्यग्राही कभी किसी पर प्रहार नहीं करता। सत्याग्रह क्रोध या द्वेष का परिणाम नहीं। उसमें धांधली, अधीरता अथवा वाचालता नहीं हो सकती। सत्याग्रह तो बल प्रयोग के सर्वथा विपरीत होता है। हिंसा के पूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गई है।[10] इस प्रकार कहा जा सकता है कि अहिंसा कि भक्तों कि प्रार्थना व्यर्थ नहीं जा सकती। सत्याग्रह स्वयं आर्त्त हृदय की एक मुक और अचूक प्रार्थना है।

सत्याग्रह कोई छोटी चीज नहीं है जो चाहे वो इसे प्रयोग कर ले। सत्याग्रह तो वही व्यक्ति कर सकता है जिसने सत्य को जान लिया है। यदि हम सत्य को जानकर उसके अनुसार आचरण करते हैं तो उपयुक्त दुःख हो ही नहीं सकता। तब प्रश्न यह उठता है कि सत्याग्रह की लड़ाई कैसे लड़ी जाय? उत्तर यह है कि सत्याग्रह की लड़ाई लड़ने का अर्थ है कि हम धीरे–धीरे सत्य ग्रहण करते जाएँ जिस सीमा तक हम उसे ग्रहण करेंगे उस सीमा तक दुःख का नाश होगा।[11] सत्याग्रह का समष्टि रूप ही नहीं बल्कि व्यष्टि रूप भी हो सकता है। क्योंकि अकेला मनुष्य ही सत्याग्रही हो सकता है। स्त्याग्रही का बल दुःख उठाने में ही है। सच्चा सत्याग्रही के संबंध में गाँधी जी कहते हैं "कौन सच्चा सत्याग्रही है और कौन नहीं... यदि तुम अभी तक यह नहीं समझ सके हो तो मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि इसकी अनुभूति होती है, कोई अन्य इसे नहीं समझ सकता है।"[12] सत्याग्रही के लिए गति मात्र आगे ले जाने वाली होती है। जमना लाल बजाज के लिखे पत्र में गाँधी ने लिखा है कि स्त्री, पुत्र, मित्र, परिग्रह सब कुछ सत्य के अधीन रहना चाहिए। सत्य की शोध करते हुए इन सबका त्याग करते हुए तत्पर रहें तो भी

सत्याग्रही हुआ जा सकता है। अभी एक भी शुद्ध सत्याग्रही उत्पन्न नहीं हुआ है।[13] इस प्रकार सत्याग्रही हमेशा बलवान होता है। उसमें भीरुता की गंध नहीं आती। परंतु उसकी निर्भयता के अनुसार उसी नम्रता बढ़नी चाहिए। विवेक शून्य की निर्भयता उसे घमंडी और उदण्ड बनाती है। गर्व और सत्याग्रही के बीच तो समुद्र लहराता है। विवेकशील की बात महाअभिमानी राजा को भी सुननी पड़ती है। सेवा के बिना नम्रता और विवेक नहीं आते। सत्याग्रही को स्थानीय अनुभव होना चाहिए। वह भी सेवा के बिना नहीं प्राप्त हो सकता।[14]

सत्याग्रही में वह शक्ति नहीं होती जिसे वह अपना कह सके। वह सम्पूर्ण शक्ति जो उसके अधिकार में दिख पड़ती है, ईश्वर से उसे प्राप्त होती है और वह ईश्वरीय शक्ति है। इसलिए वह संसार का मत अपने साथ लेकर अपने उद्देश्यों की ओर अग्रसर होता है बिना ईश्वर की सहायता के वह लंगड़ा, अंधा और पंगु है। पूर्ण सत्याग्रही के संबंध में गाँधी जी कहते हैं "पूर्ण सत्याग्रही अर्थात् ईश्वर का अवतार। तेरे मन में इस बारे में शंका है कि ऐसा पूर्ण अवतार जगत् को हिला सकता है? यह कहने में अतिश्योक्ति नहीं है कि यह जगत ऐसा अवतार पैदा करने की प्रयोगशाला है। हम सब अंश रूप में तैयार करेंगे तो किसी दिन पूर्णावतार जरूर प्रगट होगा। ऐसा हमें विश्वास रखना चाहिए।[15] इस प्रकार सच्चा सत्याग्रही समूची दुनिया का मत अपने ओर कर लेता है। यदि एक भी सत्याग्रही पर्याप्त लगन के साथ सत्याग्रह चलाता रहा तो यह कथन गलत साबित हुए बिना नहीं रहेगा और मैं भविष्यवाणी कर रहा हूँ कि जबतक संघर्ष करने के लिए एक भी सत्याग्रही बचा रहेगा हम जिन मांगों के लिए आज संघर्ष कर रहे हैं वे ठुकराई नहीं जा सकती और यह उस एक सत्याग्रही कि शक्ति की बदौलत नहीं, बल्कि इसलिए की वह जिस सत्य के लिए संघर्ष कर रहा है उस सत्य की शक्ति अजेय है।[16] इस प्रकार सत्याग्रही को अपनी न्यूनतम और अधिकतम मांग स्थिर करनी होती है। वह न उससे अधिक मांग सकता है और न उससे कम लेकर संतुष्ट हो सकता है।

सत्याग्रह असंख्य शाखाओं वाले बट वृक्ष के समान है। सविनय अवज्ञा ऐसी शाखा है, सत्य एवं अहिंसा मिलकर इसके प्रधान तने का निर्माण करते हैं जिससे असंख्या शाखाएँ फूटती है।[17] गाँधी जी ने भारत में स्वाधीनता आंदोलन में सत्याग्रह के तीन रूपों का प्रयोग किये थे– 1. असहयोग आंदोलन 2. सविनय अवज्ञा आंदोलन और 3. व्यक्तिगत सत्याग्रह। इसके अतिरिक्त सत्याग्रह के अन्य साधन हैं– 1. उपवास 2. देश त्याग या हिजरत 3. धारणा 4. हड़ताल और 5. सामाजिक बहिष्कार है। कालक्रम में सत्याग्रह के नए स्वरूप भी प्रयोग किये गये हैं– ध्यानाकर्षण सत्याग्रह। 13 मार्च 2007 को देश के जाने–माने गाँधीवादियों द्वारा परिवर्तन के रचनात्मक अभियान को शुरू करने की दिशा में ध्यानाकर्ष 24 घंटे का उपवास के रूप में बापू के समाधि पर किया गया। समय– समय पर सत्याग्रह के प्रयोग होते रहे हैं जो देश, सरकार को पथ विचलित होने से बचाता है। आज हमारी सत्याग्रही उन सारी ताकतों के खिलाफ है जो आज के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक ढांचे को टिकाये रखने में लगी हुई है। विदेशी पूंजी, विदेशी कम्पनी और विदेशी योजना की होड में भारतीय क्या बचा है अगर भारतीय कुछ नहीं बचेगा तो भारत बचेगा क्या? यह सवाल आज से सौ वर्ष पहले अपनी पुस्तक 'हिन्द–स्वराज'

में उठाया था। हमारे राजनीतिक–बौद्धिक नेतृत्व में कभी इसका जवाब खोजने की कोशिश नहीं की और आज ऐसा माहौल बनाया जा रहा है मानो इसका कोई जवाब या विकल्प है ही नहीं सत्याग्रह के संदर्भ में काका कालेलकर का कथन है कि कुछ लोग कहते हैं कि अब स्वराज्य हो गया है। इसलिए लोक नियुक्त सरकार के खिलाफ सत्याग्रह नहीं हो सकता है। मैं नहीं मानता की सत्याग्रह करने का अधिकार कभी स्थिगित हो सकता है योग्य आदमी के लिए शुद्ध सत्याग्रह करने का अधिकार हमेशा रहते ही है। हाँ, परिस्थिति के अनुसार सत्याग्रह का स्वरूप बदलना पड़ेगा।

फिर यह किसने कहा कि सत्याग्रह सिर्फ सरकार के खिलाफ हो सकता है। स्वराज्य के युग में सरकार के खिलाफ सत्याग्रह करने के प्रसंग तो कभी–कभी ही उठाते हैं किन्तु सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ, संस्थानों के दोशों के खिलाफ और धर्म के नाम प्रचलित अधर्म के खिलाफ सत्याग्रह करने के अवसर तो प्रायः आते रहते हैं।[18]

मेरा विश्वास है कि अगर दुनिया में सत्याग्रह का वायुमंडल बनाना है और बढ़ाना है तो सारी दुनिया कम्यूनिटी सेंटर्स अथवा आश्रमों की स्थापना करनी होगी और मानवीय जीवन को सर्वोदय के प्रयोग करने होंगे। ऐसे प्रत्यक्ष देखे बिना दुनिया प्रगति के लिए तैयार नहीं होगी। इस तरह सत्याग्रह की प्रथम साधनाभूमि व्यक्तिगत 'स्व' ही है। पहले व्यक्ति अपने हृदय में अहिंसा की स्थापना करेगा फिर आचरण में उसे उतारेगा। अपनी पत्नी, बच्चों, माता–पिता, कुटुम्बियों एवं स्वजनों के प्रति, समाज के प्रति, देश के प्रति, विश्व के प्रति और अविरोध की मनःस्थिति बनाने की साधना करेगा। कोई उसका शत्रु नहीं है। सब उसके मित्रा हैं, अपने हैं, अपने ही विराट 'स्व' के अंग या परस्पर पूरक हैं, यह मनःस्थिति है।[19]

गाँधी ने सत्याग्रह को अपने जीवन के हर क्षेत्र में उतारने पर बल दिया था। उन्होंने अपने सामाजिक जीवन का प्रारम्भ वकालत के पेशे से किया था। वकालत के पेशे से जुड़े पुराने–प्रचलित मिथक को तोड़कर उन्होंने नए प्रतिमान स्थापित किए। वकालत के पेशे के बारे में आम धारणा यह है की बगैर झूठ बोले चल ही नहीं सकता। किन्तु दक्षिण अफ्रीका में लंबे समय तक अपने वकालत के पेशे में गाँधी ने कभी असत्य का प्रयोग नहीं किया।[20] इस प्रकार इस पेशे से जुड़े इस मिथक को उन्होंने तोड़ दिया। उनके इस पेशे का बड़ा भाग केवल सेवा के लिए अर्पित था और कभी–कभी तो वे जेब खर्च लिए बगैर भी जरूरतमंदों की मदद करते। गाँधी ने जब तक वकालत की उनके लिए यह न्याय दिलाने[21] का जरिया था। वे अपने मुवक्किल के सच्चे केस में जीत और झूठा होने पर उसकी हार चाहते थे। यह सत्याग्रह का ही रूप था।

सत्याग्रह दुर्बलों का शस्त्र नहीं है। गाँधी की राय में शरीर– बल से प्रतिकार करने वाले व्यक्ति की अपेक्षा इसमें कहीं अधिक साहस की आवश्यकता होती है।[22] इसी कारण सत्याग्रह हेनरी डेविड थ्योरो के 'पेसिव रेजिस्तेंस' से भिन्न अर्थ रखता है। गाँधी के ही शब्दों में, "पेसिव रेजिस्तेंस शब्द वास्तविक विचार की बड़ी बेढंगी अभिव्यक्ति है। सच बात तो यह है कि मैं इस शब्द को दुर्बलों का अस्त्र मानता हूँ और नापसंद करता हूँ। यह प्रेम के कानून को बिल्कुल अशुद्ध रूप में व्यक्त करता है। प्रेम तो शक्ति का सारतत्व है। जब भाय का सर्वथा अभाव हो, तभी प्रेम

का मुक्त प्रवाह हो सकता है। स्पष्ट है कि सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध में उतना ही अंतर है जितना उत्तर एवं दक्षिण ध्रुव में है। जहां निष्क्रिय प्रतिरोध की कल्पना निर्बल के अस्त्र के रूप में की गई है और उद्देश्य सिद्धि के लिए हिंसा वर्जित नहीं है, वहीं सत्याग्रह की कल्पना परम शूर के अस्त्र के रूप में की गई है जहां किसी भी रूप में हिंसा के प्रयोग के लिए स्थान नहीं है। गाँधी आतंकवाद को रोकने का एकमात्र उपाय[23] सत्याग्रह मानते हैं।

गाँधी की सेवा की पद्धति सत्याग्रह थी। यही कारण था कि जब भारत में उन्होंने अपना पहला आश्रम बनाया तो उसका नाम सत्याग्रह आश्रम रखा। उनका यह आश्रम अहमदाबाद के निकट कोचरब नामक स्थान पर था। हालांकि गांधीजी को हरिद्वार, वैद्यनाथ धाम आदि स्थानों पर आश्रम बनाने का प्रस्ताव मिला था, लेकिन गाँधी जी ने अहमदाबाद यानि गुजरात में ही अपना पहला आश्रम उपयुक्त समझा। इसके पीछे एक भावना तो भाषा को लेकर था कि गुजराती होने के नाते अपनी भाषा द्वारा वे देश की अधिक से अधिक सेवा कर पाएंगे। और दूसरा कारण अहमदाबाद के सूती वस्त्र उद्योग तथा हाथ से बुना जाने वाले वस्त्र का केंद्र होने के लिए चरखे के काम के अनुकूल था। यहाँ के धनी व्यापारियों से आर्थिक सहयोग प्राप्ति की संभावना[24] भी यहाँ आश्रम स्थापित करने की वजह बनी। गाँधी सेवक में नम्रता को आवश्यक गुण मानते हैं। उनके अनुसार, 'मुमुक्ष अथवा सेवक के प्रत्येक कार्य में नम्रता– अथवा निरभिमानिता न हो, तो मुमुक्ष नहीं है, सेवक नहीं है। वह स्वार्थी है, अहंकारी है।

गाँधी के सत्याग्रह का मूल आधार सत्य और अहिंसा धर्म है। सत्याग्रह उनके किए सत्य की निरापद खोज है। सत्याग्रह की मान्यता है कि सत्य की सदैव जीत होती है। भले ही कभी–कभी मार्ग बहुत कठिन जान पड़ता है और ऐसा लगाने लगता है कि सत्य को थोड़ा छोड़ दें तो सफलता मिल जाएगी। किन्तु सत्यग्रही सत्य का त्याग नहीं करता। उसकी श्रद्धा ऐसे समय भी सूर्य के समान चमकती रहती है। सत्याग्रही निराश नहीं होता क्योंकि उसके पास सत्य की तलवार होती है इसलिए उसे लोहे की तलवार या गोला– बारूद की जरूरत नहीं होती। वह आत्मबल अथवा प्रेम से शत्रु को भी अपने वस्ध में कर लेता है। परिस्थिति में सुधार करने के लिए सत्याग्रह एक शक्तिशाली साधन है– शायद संसार का सबसे शक्तिशाली साधन[25] उन्होंने अपने सत्याग्रह के प्रयोग के जरिये यह बात साबित भी की है।

अगर सरल भाषा में कहा जाय तो कहा जाएगा कि सत्याग्रह में बुराई का उत्तर बुराई से न देकर उससे धैर्यपूर्वक लड़ा जाता है। इसलिए इसमें हिंसा अथवा डराने– धमकाने की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती है। गाँधी के लिए असहयोग और कुछ नहीं, आत्मबलिदान का अनुशासन है। असहयोग सत्याग्रह से भिन्न नहीं है। असहयोग अथवा सविनय अवज्ञा में भी मूलतः सत्याग्रह का ही भाव निहित है। सत्याग्रह में हृदय– परिवर्तन निहित है। सत्याग्रह के बिना सर्वोदय असंगत है। सत्याग्रह ऐसी शक्ति है जिसका प्रयोग व्यक्ति और समाज दोनों के द्वारा किया जा सकता है। राजनीतिक और घरेलू मामलों में, एक समान, इसका प्रयोग किया जा सकता है। पुरुष, स्त्रियां और बच्चे सब इस पर अमल कर सकते हैं। गाँधी के नेतृत्व में चले स्वतन्त्रता आन्दोलन में स्त्रियों ने बड़े पैमाने पर सत्याग्रह में भगादारी दी थी। इससे पुरे भारत के इतिहास

में इतने बड़े पैमाने पर किसी भी आन्दोलन में स्त्रियों की भागीदारी शायद ही हो पाई थी। गाँधी ने इस भागीदारी के लिए सत्याग्रह के तरीके को ही प्रभावी माना है। इसके साथ ही हिंसक युद्ध का भी यह नैतिक व अहिंसक विकल्प है। वर्तमान अणु–परमाणु व जैविक–रासायनिक आयुधों से लेश विश्व में सत्याग्रह ही सृजन का रास्ता है। शोषण मुक्त मानवीय समाज की रचना का यह सर्वसुलभ और श्रेष्ठतम मार्ग है, जिसपर इस पूरे संदर्भ में विचार करने की आवश्यकता है।

इस प्रकार सत्याग्रह गाँधी दर्शन का महत्वपूर्ण व अभिन्न अंग है। प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान होमर ए. जैक गाँधी की सबसे बड़ी विरासत सत्याग्रह को ही मानते हैं, जिससे उन्होंने भारत की राजनीतिक स्वतन्त्रता के सफल अभियान का नेतृत्व किया था। शोषण और अन्याय से मुक्ति ही वह सत्य है, जिससे लड़ने के लिए उन्होंने सत्याग्रह का अस्त्र दिया था। दासता का मतलब ही शोषण और अन्याय होता है। उसी से मुक्ति की लड़ाई के लिए गाँधी ने सत्याग्रह की नैतिकता स्थापित की थी। गाँधी का सत्याग्रह सच्चे लोगों का हथियार है। जिसमें लड़ाई का शांतिपूर्ण होना अनिवार्य शर्त है। गाँधी हाब्स की भांति मनुष्य को स्वभाव से लड़ाकू नहीं बल्कि शांतिप्रिय मानते है।

सत्याग्रह प्रेम पर आधारित है, घृणा पर नहीं। सत्याग्रह का आधार अपने विपक्षी को प्रेम करने और स्वयं कष्ट उठाकर उसका हृदय– परिवर्तन करने में है। सत्याग्रह पाप का प्रतिरोध है, पापी का नहीं। क्योंकि आक्रामकता मानव– स्वभाव का मौलिक अंग नहीं है। प्रतिस्पर्धा के स्थान पर नम्रता और शालीनता की प्रतिष्ठा की जा सकती है। सत्याग्रह अनुशासन की मांग करता है, इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को आत्मबलिदान करना पड़ सकता है– उत्पीड़न, उपवास और मृत्यु का भी वरन करना पड़ सकता है। फिर भी सत्याग्रह का महान गुण सर्वोच्च लक्ष्यों के अनुरूप साधनों की व्याख्या करने में ही है। ईसा क्रॉस का यही संकेत है कि कष्ट सहन करने वाला प्रेम उस शक्ति से कहीं अधिक शक्तिमान है, जो दूसरों पर कष्टों कि वर्षा करता है। इसलिए कष्टसहन करने वाले के ही पास क्षमा करने की शक्ति होती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. गाँधी जी, सत्याग्रह, प्रधान संपादक, श्री रामनाथ 'सुमन' उत्तर प्रदेश गाँधी स्मारक निधि, सेवा पुरी, वाराणसी, प्रस्तावना, पृ. 9.
2. गाँधी, म. क. आत्मकथा, पृ. 278.
3. गाँधी,म. क. इंडियन ओपिनियन, अक्तूबर 28, पृ. 1911.
4. उपरिवत, भूमिका, पृ. 22.
5. इंडियन ओपिनियन, 26.9.1908. गुजराती.
6. इंडियन ओपिनियन, 18.12.1909.
7. मोतीहारी, 24.1.1918. गुजराती. काका कालेलकर को लिखे पत्र से।
8. हिन्दी नवजीवन, 18.5.1924.

9. यंग इंडिया, 4.6.1925.
10. हरिजन– सेवक, 28.4.1925.
11. इंडियन ओपिनियन (गुजराती),10.10.1908.
12. 1914 में मणि लाल एवं जमना दास गाँधी को लिखे पत्र का अंश। 'गाँधी जी की साधना से'।
13. 16.3.1922. को जमना लाल बजाज के लिखे पत्र का अंश।
14. हिन्दी नवजीवन, 25.5.1924.
15. 'बापू के पत्र : कुमारी प्रेमा बहन कटक के नाम' पृ. 240.
16. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, प्रथम संस्करण,1961. ट्रांसवाल लीडर',1.10.1913.
17. बम्बई 18.4.1919. सविनय अवज्ञा स्थगित करने के वक्तव्य से.
18. गाँधी जी, सत्याग्रह, प्रधान सम्पादक श्री रामनाथ 'सुमन' प्रस्तावना, पृ.**14–15.**
19. उपरिवत, भूमिका, पृ.**20.**
20. गाँधी, म. क., आत्मकथा, पूर्वोक्त, पृ. **316.**
21. वही, 1987, पृ.**316.**
22. गाँधी, म. क., इंडियन ओपिनियन जून 15.,1914.
23. गाँधी, म. क., फरवरी 25,1919य महादेव भाई की डायरी, भाग. 5.
24. गाँधी, म. क., आत्मकथा, पूर्वोक्त, पृ. **343–344.**
25. गाँधी, म. क. नेटाल मर्करी, जून 29, 1914.